अर्थव्यवस्था में निवेश बढ़ा

दूसरी लहर के बाद रिकवरी नहीं हुई है। रिजर्व बैंक के मई और जुलाई के कंस्यूमर कॉन्फिडेंस सर्वे दिखाते हैं कि इसमें सुधार नहीं हुआ है। निजी खपत और कंस्यूमर कॉन्फिडेंस को बढ़ावा देने के लिए केंद्र को पेट्रोल और डीजल पर टैक्स घटाने पर भी विचार करना चाहिए।

अंजु सिंह।।

वित्त वर्ष 2021–22 की पहली यानी अप्रैल–जून तिमाही में आर्थिक विकास दर (जीडीपी) 20.1 प्रतिशत रही। इसकी वजह यह है कि पिछले साल की इसी तिमाही में जीडीपी में 24.4 प्रतिशत की गिरावट आई थी। यानी पिछले वित्त वर्ष की पहली तिमाही में भारी गिरावट के कारण इस साल अप्रैल–जून तिमाही में जीडीपी ग्रोथ अच्छी दिख रही है। अगर इसकी तुलना कोरोना महामारी के दस्तक देने से पहले यानी वित्त वर्ष 2019–20 की अप्रैल–जून तिमाही से करें तो यह 9.4 प्रतिशत कम है।

वित्त वर्ष 2020–21 की आखिरी तिमाही (जनवरी–मार्च) की तुलना में इस साल की अप्रैल–जून तिमाही की आर्थिक विकास दर 16.9 फीसदी कम है। इसकी एक बड़ी वजह कोरोना की दूसरी लहर रही, जिससे इकॉनमी को उबरने में वक्त लग सकता है। ऐसे में लगता नहीं कि वित्त वर्ष 2021–22 की बाकी बची तीन तिमाहियों में जीडीपी ग्रोथ में इतनी बढ़ोतरी होगी कि अर्थव्यवस्था का आकार महामारी से पहले के स्तर तक पहुंच पाएगा। जीडीपी के अनुपात में ग्रॉस फिक्स्ड कैपिटल फॉर्मेशन महामारी के पहले के 27 प्रतिशत तक पहुंच गया है। यहां हमें याद रखना होगा कि कोरोना के दस्तक देने से पहले भी जीडीपी दर कमजोर थी। इसमें दूसरी दिक्कत यह है कि सरकार के खर्च बढ़ाने से अर्थव्यवस्था में निवेश बढ़ा है। यह अच्छा तो है, लेकिन इकॉनमी की रफ्तार तेज करने और उसकी अच्छी सेहत के लिए निजी क्षेत्र की ओर से निवेश बढ़ना भी जरूरी है। वह तभी होगा, जब वस्तुओं और सेवाओं की खपत यानी कंजम्पशन में बढ़ोतरी होगी।

देश की अर्थव्यवस्था में 50 प्रतिशत का योगदान रखने वाला प्राइवेट कंजम्पशन इस साल की अप्रैल–जून तिमाही में 19. 3 प्रतिशत बढ़ा, जबकि एक साल पहले की इसी तिमाही में इसमें 26.2 प्रतिशत की गिरावट आई थी। दूसरे आंकड़े भी संकेत दे रहे हैं कि इसमें कोरोना की दूसरी लहर के बाद रिकवरी नहीं हुई है। रिजर्व बैंक के मई और जुलाई के कंस्यूमर कॉन्फिडेंस सर्वे दिखाते हैं कि इसमें सुधार नहीं हुआ है। निजी खपत और कंस्यूमर कॉन्फिडेंस को बढ़ावा देने के लिए केंद्र को पेट्रोल और डीजल पर टैक्स घटाने पर भी विचार करना चाहिए। इससे आम लोगों के हाथ में खर्च करने के लिए पैसा बढ़ेगा। पेट्रोल–डीजल की ऊंची कीमतों और सप्लाई संबंधी बाधाओं के कारण इधर महंगाई दर में भी बढ़ोतरी हुई है। महंगाई की सबसे अधिक चोट गरीबों पर पड़ती है। इसलिए ईंधन के दाम में कटौती बहुत जरूरी है। एक तो इससे उनकी जिंदगी आसान होगी, दूसरे खपत में भी इजाफा होगा।

हालांकि सरकार ने अर्थव्यवस्था की रफ्तार तेज करने के लिए भारी–भरकम निवेश की योजना बनाई है। इसके लिए वह अपनी संपत्तियां लीज पर देकर पैसा जुटाएगी, लेकिन इस योजना पर अमल में वक्त लग सकता है। इसलिए अभी तो उसे कर्ज लेकर निवेश बढ़ाना चाहिए। इससे हर तरह के बिजनेस को फायदा होगा, रोजगार में बढ़ोतरी होगी और अर्थव्यवस्था की गति तेज होगी। सरकार को इसमें देर नहीं करनी चाहिए।

ईश्वर के सामने

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

"हे राजा, गृहस्थ और योगी को त्यागी होना चाहिए। रही योगी या गृहस्थ बनने की बात तो यह अपनी अपनी पसंद है, जो जैसा होना चाहे?" तब योगी बोला, "हे मूर्ख राजा! मेरे बरताव को देख तुम्हें नहीं मालूम हुआ कि योगी कैसा होना चाहिए? एक बार एक चालाक आदमी भूख से बेहाल इधर–उधर भोजन की तलाश में घूम रहा था। अंत में जब उसे भोजन प्राप्त नहीं हुआ तो निराश होकर ईश्वर के सामने घुटने टेक दिए– "हे ईश्वर, मुझ पर दया करो। अगर तुम मुझे एक सौ खजूर दोग तो मैं आधे तुम्हारी सेवा में अर्पित कर दूंगा।" जब उसने नेत्र खोले तो सचमुच उसके आगे खजूरों का ढेर लगा हुआ था। वह आदमी बहुत प्रसन्न हुआ और खजूरों की गिनती करने लगा। पूरे पचास थे। उसने सभी खजूर पेट भर खा लिए और बोला– "हे ईश्वर! मुझे नहीं मालूम था कि तुमने अपने हिस्से के खजूर पहले ही रख लिए हैं। तुम तो हिसाब–किताब में बड़े पक्के हो।"

संपादकीय

भागीदारी की ताकत

2015 में अपने स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में मैंने कहा था कि हमारा देश 'टीम इंडिया' की वजह से आगे बढ़ रहा है और यह 'टीम इंडिया' हमारे 130 करोड़ लोगों की एक बड़ी टीम है। जनभागीदारी लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है। यदि हम 130 करोड़ भारतीयों की भागीदारी से देश चलाएंगे तो हमारा देश हर पल 130 करोड़ कदम आगे बढ़ेगा। हमारे टीकाकरण अभियान ने एक बार फिर इस 'टीम इंडिया' की ताकत दिखाई है। टीकाकरण अभियान में भारत की सफलता ने पूरी दुनिया को यह भी दिखाया है कि 'लोकतंत्र हर उपलब्धि हासिल कर सकता है'। इन सभी प्रयासों को कोविन के एक मजबूत तकनीकी मंच से जबर्दस्त मदद मिली। इसने यह सुनिश्चित किया कि टीकाकरण अभियान न्यायसंगत, मापनीय, ट्रैक करने योग्य और पारदर्शी बना रहे। इसने सुनिश्चित किया कि टीकाकरण के काम में कोई पक्षपात या बिना पंक्ति के टीका लगवाने की कोई गुंजाइश ना हो। इसने यह भी सुनिश्चित किया कि एक गरीब मजदूर अपने गांव में पहली खुराक ले सकता है और उसी टीके की दूसरी खुराक तय समय अंतराल पर उस शहर में ले सकता है, जहां वह काम करता है। टीकाकरण के काम में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए रियल–टाइम डैशबोर्ड के अलावा, क्यूआर–कोड वाले प्रमाणपत्रों ने सत्यापन को सुनिश्चित किया। इस तरह के प्रयासों का न केवल भारत में बल्कि दुनिया में भी शायद ही कोई उदाहरण मिले। मुझे उम्मीद है कि दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान में मिली सफलता हमारे युवाओं, हमारे शोधकर्ताओं और सरकार के सभी स्तरों को सार्वजनिक सेवा वितरण के नए मानक स्थापित करने के लिए प्रेरित करेगी, जो न केवल हमारे देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए भी एक मॉडल होगा।

चिंता से आश्वासन तक की यात्रा पूरी हो चुकी है और दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान के फलस्वरूप हमारा देश और भी मजबूत होकर उभरा है।

एक भगीरथ प्रयास

नरेन्द्र मोदी।।

भारत ने टीकाकरण की शुरुआत के मात्र 9 महीनों बाद ही 21 अक्टूबर, 2021 को टीके की 100 करोड़ खुराक का लक्ष्य हासिल कर लिया है। कोविड –19 से मुकाबला करने में यह यात्रा अद्भुत रही है, विशेषकर जब हम याद करते हैं कि 2020 की शुरुआत में परिस्थितियां कैसी थीं। मानवता 100 साल बाद इस तरह की वैश्विक महामारी का सामना कर रही थी और किसी को भी इस वायरस के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। हमें यह स्मरण होता है कि उस समय स्थिति कितनी अप्रत्याशित थी, क्योंकि हम एक अज्ञात और अदृश्य दुश्मन का मुकाबला कर रहे थे, जो तेजी से अपना रूप भी बदल रहा था। चिंता से आश्वासन तक की यात्रा पूरी हो चुकी है और दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान के फलस्वरूप हमारा देश और भी मजबूत होकर उभरा है।

इसे वास्तव में एक भगीरथ प्रयास मानना चाहिए, जिसमें समाज के कई वर्ग शामिल हुए हैं। पैमाने का अंदाजा लगाने के लिए, मान लें कि प्रत्येक टीकाकरण में एक स्वास्थ्यकर्मी को केवल 2 मिनट का समय लगता है। इस दर से, इस उपलब्धि को हासिल करने में लगभग 41 लाख मानव दिवस या लगभग 11 हजार मानव वर्ष लगे। गति और पैमाने को प्राप्त करने तथा

इसे बनाए रखने के किसी भी प्रयास के लिए, सभी हितधारकों का विश्वास महत्वपूर्ण है। इस अभियान की सफलता के कारणों में से एक, वैक्सीन तथा बाद की प्रक्रिया के प्रति लोगों का भरोसा था, जो अविश्वास और भय पैदा करने के विभिन्न प्रयासों के बावजूद कायम रहा। हम लोगों में से कुछ ऐसे हैं, जो दैनिक जरूरतों के लिए भी विदेशी ब्रैंडों पर भरोसा करते हैं। हालांकि, जब कोविड –19 वैक्सीन जैसी महत्वपूर्ण बात सामने आई, तो देशवासियों ने सर्वसम्मति से 'मेड इन इंडिया' वैक्सीन पर भरोसा किया। यह एक महत्वपूर्ण मौलिक बदलाव है। भारत का यह टीका अभियान इस बात का एक उदाहरण है कि अगर यहां के नागरिक और सरकार जनभागीदारी की भावना से लैस होकर एक साझा लक्ष्य के लिए मिलकर साथ आएं, तो यह देश क्या कुछ हासिल कर सकता है। जब भारत ने अपना टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया, तो 130 करोड़ भारतीयों की क्षमताओं पर संदेह करने वाले कई लोग थे। कुछ लोगों ने कहा कि भारत को 3–4 साल लगेंगे। कुछ अन्य लोगों ने कहा कि लोग टीकाकरण के लिए आगे नहीं आएंगे। कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होंने कहा कि टीकाकरण प्रक्रिया घोर कुप्रबंधन और अराजकता की शिकार होगी। कुछ ने तो यहां तक कह दिया कि भारत सप्लाई चेन को व्यवस्थित नहीं कर पाएगा। लेकिन जनता कर्फ्यू और उसके बाद के लॉकडाउन की तरह, भारत के लोगों ने यह दिखा दिया कि अगर उन्हें भरोसेमंद साथी बनाया जाए तो परिणाम कितने शानदार हो सकते हैं। जब हर कोई जिम्मेदारी उठा ले, तो कुछ भी असंभव नहीं है।

हमारे स्वास्थ्य कर्मियों ने लोगों को टीका लगाने के लिए कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में पहाड़ियों और नदियों को पार किया। हमारे युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, स्वास्थ्य कर्मियों, सामाजिक एवं धार्मिक नेताओं को इस बात का श्रेय जाता है कि टीका लेने के मामले में भारत को विकसित देशों की तुलना में बेहद कम हिचकिचाहट का सामना करना पड़ा है।

अष्टयोग- 4943

7	6	5		1	3	
	41		32		22	1
4	3	7			2	
	26		34	4	38	6
1	2				6	
	21		36	3	39	7
	1	2			4	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4942 का हल

3	5	7	1	6	2	4
7	37	6	37	2	29	3
2	4	3	7	5	6	1
6	31	1	28	4	32	5
4	6	5	2	1	3	7
1	28	4	27	3	33	2
5	1	2	3	7	4	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

निश्चित रूप से एक अभूतपूर्व प्रयास

मोहन। भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में सिर्फ उत्पादन करना ही काफी नहीं है। इसके लिए अंतिम व्यक्ति तक को टीका लगाने और निर्बाध लॉजिस्टिक्स पर भी फोकस होना चाहिए। इसमें निहित चुनौतियों को समझने के लिए जरा इसकी कल्पना करें कि टीके की एक शीशी को आखिरकार कैसे मंजिल तक पहुंचाया जाता है। पुणे या हैदराबाद स्थित किसी दवा संयंत्र से निकली शीशी को किसी भी राज्य के हब में भेजा जाता है, जहां से इसे जिला हब तक पहुंचाया जाता है। फिर वहां से इसे टीकाकरण केंद्र पहुंचाया जाता है। इसमें विमानों की उड़ानों और ट्रेनों के जरिए हजारों यात्राएं सुनिश्चित करनी पड़ती हैं। टीकों को सुरक्षित रखने के लिए इस पूरी यात्रा के दौरान तापमान को एक खास रेंज में बनाए रखना होता है, जिसकी निगरानी केंद्रीय रूप से की जाती है। इसके लिए 1 लाख से भी अधिक शीत–श्रृंखला उपकरणों का उपयोग किया गया। अतः स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह निश्चित रूप से एक अभूतपूर्व प्रयास रहा है।